ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO. 125-128
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

भारतीय समाज में नारी चेतना

निधि श्रीवास्तव
शोध अध्येत्री– हिन्दी विभाग, नई बाजार, बक्सर (बिहार), भारत

सारांश : *इस सृष्टि की सभी वस्तुएँ प्रकृतिपरक हैं। नारी विधाता की अद्भुत कृति के रूप में सृष्टि में उपस्थित है। वैदिक काल में नारी को सर्वोच्च स्थान की प्राप्ति हुई है। "ऋग्वेद में स्त्री–पुरुष दोनों के लिए 'ऋषि'शब्द का प्रयोग किया गया।" वैदिक काल में नारी को सर्वोच्च स्थान की प्राप्ति हुई है। मैत्रेयी,गार्गी जैसी विदुषी नारियों ने अपने सम्पूर्ण जीवन को यज्ञ की तरह जिया है। वेदों के सहस्त्रों मंत्रों में नारी की उत्कृष्ट छवि को अंकित किया गया है। यज्ञ में स्त्री को ब्रह्मा का स्थान ग्रहण करने योग्य स्वीकार किया गया है।*

सरस्वती, देवयन्तो, हवन्ते, सरस्वतीमध्वरे तायमाने,
सरस्वती सुकृतो अहुयन्त सरस्वती दाशुषे वार्यदात्।"

अर्थात् दिव्य गुणों की कामना करने वाली, विदुषी देवी को हम आमंत्रित करते हैं। यज्ञों के अवसर पर सरस्वती रूपी सुगठित देवी को हम बुलाते हैं। उत्तम कर्मवाली सन्नारी को हम आहूत करते हैं। वह ज्ञानशील व्यक्तियों को उत्तम ज्ञान देती हैं। नारी के महत्व को वैदिक संहिताओं में सर्वत्र प्रस्थापित किया गया है।

"अहं केपुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी।
ममदेनु क्रंतु पतिः सेहानाया उपाचरेत।"

स्त्री स्वीकार करती है तथा वह पूरे आत्म सन्मान के साथ कहती है मैं केतु(ध्वजा) तुल्य हूँ, समाज की मूर्धास्थानीय हूँ, तेजस्विनी बनकर सभाओं में भाषण देनेवाली हूँ। मेरा पति, मेरी इच्छा, ज्ञान और कर्म के अनुरुप आचरण करता है।

"उपनिषदों के समय की गार्गी जनक की सेना में याज्ञवल्क्य के दर्शन एंव अध्यात्म पर गंभीर संवाद करती है। गार्गी का उपनाम वाचक्वनी है। वे वचक्तु ऋषी की विदुषी पुत्री है। अनेक विद्वान स्वीकार करते हैं कि पिता के कारण पुत्री को नाम व यश की प्राप्ति हुई। गार्गी के जैसी ही मैत्रेयी का प्रसंग भी उपनिषद में प्राप्त होता है। महिला विदुषियाँ मोक्ष अथवा अमरत्व प्राप्त करने तक के लिए सचेष्ट थी। उपनिषद की महिला सासांरिक सुखों को त्यागकर आत्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान की और उत्कृष्ट दिखाई देती है।"

पुराण साहित्य भी स्त्री उदाहरणों का खजाना है। पुराण अट्ठारह हैं तथा वे उपनिषदों से कई गुना बड़े हैं। स्त्री एंव पुरुष दोनों के लिए ही जीवन की गाड़ी के पहिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। पुराण साहित्य में स्त्री के व्यक्तित्व को समुचित आदर प्रदान किया गया एंव उसे गरिमामय पद पर प्रतिष्ठित किया गया। वैदिककालीन पुरुष प्रधान समाज ने स्त्री को सम्मानित पद प्राप्त कराए। यहाँ ऋषिकाएँ विदुषी स्त्रियाँ थी, न कि ऋषि पत्नी। उन्हें वेदों की ऋचाएँ के साथ–साथ अनेक ऋषिकाओं के उल्लेख भी मिलते है। महत्वपूर्ण बात यह है कि दोनों संबंध में विवरण बराबर है। ऋग्वेद के प्रथम मंडल में रोमशा (सू. १६) , लोपमुद्रा (सू.१७९) एंव ममता(सू.१०) का उल्लेख है। आठवें मंडल में अपाला (सू६१) एंव शाश्वती (सू.३४) के मंत्र है। दशम मंडल में सबसे अधिक ऋषिकाएँ सम्मिलित की गई हैं। श्रद्धा कामायनी (सू.१५१) यमी, वैवस्ती (सू.१५४) घोषा, वाक् एंव सूर्या की रचनाएँ हैं। ये सब स्त्री ऋषिकाएँ हैं।"

सूर्या सावित्री नामक विदुषी स्त्री ने विवाह सूक्त की रचना की। आज भी उनके द्वारा रचित कई मंत्र विवाह के अवसर पर दोहराये जाते हैं।

सुमंड.ग्लीरियं वधूरिमां समेत पश्यत। सौभाग्यमस्यै दत्वायाथास्त वि परेतन।।"[3]

यह नववधू मंगल चिन्ह से सुसज्जित है। आशीर्वाद देने वाले सब आये, उसके दर्शन करें, इस विवाहिता को उत्तम सौभाग्यवती होने का शुभाशीष देने के बाद, सब अपने अपने घर जायें ऋग्वेद के बाद, महिला लेखन के नमूने हमें थेरी गाथा के रूप में मिलते हैं। प्रथम भारतीय नवजागरण काल ई.पू. 400 वर्ष माना जाता है। इस समय तक वैदिक धर्म कर्मकांड की सीमा तक पहुँचकर समाज की चुनौती को स्वीकार करने में असमर्थ हो चुका था।"

थेरी गाथाएँ 522 गाथओं का संकलन है। थेरी गाथा में विभिन्न वर्णों तथा वर्गों की महिलाएँ शामिल हैं, जिन्होंने अपने जीवन के संचित अनुभवों को भिक्षुणी बन इन गाथाओं में गाया है। "थेरी गाथाओं की अपनी पहचान है, यह पहचान अनेक मुखी है। सबसे पहली पहचान स्त्री होने की है। इसकी शुरुआत बाह्य प्रकृति के लगाव से होती है। थेरी गाथाएँ अपने भीतर की यात्राएँ हैं, जिसमें उनकी पूर्व स्मृतियाँ भी जुड़ी हैं।"[4]

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

रामायण महाभारत युग, अर्थात् महाकाव्य युग की नारी भी कम शक्तिशाली एंव सम्माननीया नहीं है। वैदिक युग की परंपरा को ही इन दोनों महाकाव्यों में स्थान दिया गया है। महाभारत की स्त्री भी वैदिक परंपरा से ओतप्रोत बुद्धिशालिनी है। सावित्री का उपाख्यान भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटनाक्रम है, जिसमें उसकी बुद्धिमता का परिचय दिखाई देता है।,"सावित्री यम को कहती कि आपने मुझे पुत्र प्राप्ति का वरदान किया मगर बिना पति के वो पूर्ण नहीं होगा, आप मेरे पति को जीवित कीजिए। पति बिना पतिव्रता स्त्री का जीवन निरर्थक है। सावित्री पर प्रसन्न होकर सत्यवान को जीवित करके, यमराज चारसो साल का आयुष्य किर्ती का वरदान देकर चले गये।"[5]

बुद्धिहीन पति को भी स्त्री जिस प्रकार विद्वान बनने को विवश कर देती है, यह कालिदास, तुलसीदास के विद्वान बनने की घटना से स्वतः ही प्रत्यक्ष हो जाता है। इनके अतिरिक्त हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान 'राम की शक्ति पूजा' एंव 'तुलसीदास' जैसी रचनाओं के रचयिता सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' को पहले हिन्दी भाषा का ज्ञान बिल्कुल भी नहीं था, उन्हें उनकी धर्मपत्नी ने भाषा की शिक्षा दी। उन्होंने अपनी पत्नी मनोहरा देवी को अपनी हिन्दी काव्य साधना की प्रेरणा के रूप में स्वीकार किया। नारी को माता के रूप में प्रथम गुरु की उपाधि से सशोभित कर आदर प्रदान किया गया है। प्रथम गुरु को स्नेह, करुणा, श्रद्धा, विश्वास, ममता, व त्याग की मूर्ति के रूप में सराहा गया। सदैव ही आदरणीय माता का रूप निंदा मुक्त रहा है। किंवदंती है कि दस बालक अपनी एक माँ का बोझ नहीं संभाल पाते जबकि एक माँ अपनी दस संतानों का बोझ हँसते–हँसते संभाल लेती है।

प्रागैतिहासिक काल में भारतीय संस्कृति के अभ्युदय को भारतीय सभ्यता के उषाकाल का सूत्रपात माना जा सकता है। आधुनिक युग तक पहुँचते–पहुँचते नारी के रास्ते में न जाने कितने ही पड़ाव आए। "गुप्त काल के समाप्त होने तक सामन्तीकरण एंव सांस्कृतिकीकरण की प्रक्रिया पूर्ण हो चुकी थी। संस्कृत भाषा को साहित्यिक प्रभुत्व प्राप्त था, किन्तु अपभ्रंश भाषाएँ विकसित हो रही थी। प्राकृत काल संस्कृत कविता का स्वर्ण युग है, 'गाथा सप्तशती' में लगभग सोलह कवयित्रियों की रचनाओं के उल्लेख टीकाकारों ने किये है।"[6]

मध्यकाल में भी स्त्रियों की स्थिति बहुत मजबूत थी। हर्षवर्धन की बहन राज्यश्री शासन में उसका सहयोग करती थी। "मुसलमान राजघरानें में भी स्त्रियों की पकड़ राजनीति और सत्ता पर थी। रजिया सुल्तान का नाम तो प्रसिद्ध ही है जिसने गद्दी पर बैठते ही सारी शक्ति अपने हाथों में ले ली थी।"[7]

"मुगलकाल में भी यह परंपरा चलती रही। कहा जाता है कि तैमूर की सेना में स्त्रियाँ भाला, तीर और तलवार चलाती थी। बाबर की पुत्री गुलबदन बेगम सबसे शिक्षित महिला थी, जिसने हुमायूँनामा लिखा।"[8] सोलहवीं शताब्दी से लेकर 18वीं शताब्दी तक के मध्यकाल में महिलाओं की स्थिति का जितना पतन हुआ उतना कभी नहीं हुआ। "इस युग के स्मृतिकारों ने बार–बार इस बात पर जोर किया कि पत्नी के लिए सबसे बड़ा धर्म पति की सेवा है।"[9]

11वीं शताब्दी के प्रारंभ से मुसलमानों का प्रभाव भारतीय समाज पर बढ़ने लगा, जिससे हमारी संस्कृति की रक्षा करना आवश्यक हो गया। ब्राह्मणों ने महिलाओं के सतीत्व, संस्कृति की रक्षा बनाए रखने के लिए महिलाओं के संबंध में नियम कठोर कर दिये। सती प्रथा को धार्मिक आवरण के नाम पर बढ़ावा दिया गया। अब महिलाएँ अपने अस्तित्व के लिए पुरुषों पर निर्भर हो गई। अंग्रेजों के आगमन से स्त्रियों की स्थिति पर एक परोक्ष प्रभाव पड़ा। अंग्रेज पादरी हिन्दु धर्म की कुरीतियों पर अपने धर्म प्रचार के लिए प्रहार करते थे।

"सामाजिक क्षेत्र में महिलाओं को शिक्षा प्रदान करने, स्वतंत्र रूप से अपने अधिकारों की माँग करने और व्यवहार–नियमों में किसी प्रकार का परिवर्तन करने का
अधिकार नहीं था। अज्ञानता ज्यादा थी साक्षरता का प्रतिशत 6 से कम था। शिक्षा भी केवल कामचलाऊँ ही थी। किसी भी महिला द्वारा बाल–विवाह अथवा पर्दा प्रथा का विरोध करना उसके चरित्र के लिए कलंक समझा जाता था। महिला के संबंध क्षेत्र, माता–पिता, परिवार, धर्म–परंपरा तक था। धार्मिक दायित्वों का निर्वाह करना ही उनके मनोरंजन का एक मात्र साधन था।"[10]

डॉ. के.एम.पनिक्कर ने लिखा है कि हिन्दु समाज में स्त्री के अधिकार को कानून द्वारा समाप्त कर दिया गया। पत्नी पति के परिवार का एक अंग बन गई थी और विधवाओं को मृतक के समान माना जाता था।"[11] राजनीति में भी महिलाओं का कोई स्थान नहीं था। महिला का घर में पुरुष शोषण करता तथा वह पुरुष अंग्रजों का गुलाम था। परंपराएँ तो वास्तव में वही चली आ रही हैं। हम वैदिक युग से चलते हुए ही इस युग में पर्दापण कर रहे हैं। मानस मन वही है, चिंतन वही है, सोच वही है अगर बदलाव आया है तो वह है समय में जो कि स्वाभाविक ही है। नारी की पौराणिक अवधारणाओं में अंतर आ गया था। वह भोग्या मात्र रह गई थी तथा क्रय–विक्रय और अपहरण की सामग्री बन गई थी। विदेशी–स्वदेशी राजाओं, सामंतों और उनके कारगुजारों से नारी की इज्जत बचाने हेतु उस पर बंधन कड़े हो गये थे। शिक्षा का अवसर नहीं दिया

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

जाता था वह घर की दीवारों में बंद होकर रह गई। सती प्रथा और जौहर प्रथाएँ इसी काल में जन्म लेने लगी।''

भारतीय नारी प्रारंभिक एंव मध्यकालीन दौर से गुजरते हुए आज आधुनिक युग में अपने अस्तित्व की तलाश कर रही है। नारी के व्यक्तित्व या अस्तित्व को किसी भी युग में नकार पाना असंभव है। आत्मविश्वास से भरपूर नारी विवशताओं के जंगल में भटकने को मजबूर होने लगी। नारी की दुर्दशा से व्यथित महर्षि दयानंद व आर्य समाज ने नारी उत्थान के लिए जो कार्य किए वे अविस्मरणीय हैं। समय से आए बदलाव से ही एक इतिहास की रचना होती है। स्वामी दयानंद ने स्त्री को घर व समाज की मोरध्वजा कहा है। उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में नारी को बेचारी, बोझ, त्याज्य आदि उपालंभों के स्थान पर शक्ति एंव भक्ति की विचारधारा से सुशोभित किया है। उनके मेहनत के परिणामस्वरूप ही स्त्रियों को बाल विवाह, सतीप्रथा आदि कुरीतियों से छुटकारा प्राप्त हुआ।

''आर्य समाज सर्वधर्म समानता का पक्षधर है– उसमें पुरुष–स्त्री आदि की कहीं अपेक्षा–उपेक्षा नहीं है। यह हमें ज्ञात ही है। आर्य समाज ने तो पूरी श्रद्धा एंव विश्वास से स्त्री को पुरुष के समान एक इकाई मानकर उसे जगाया। प्रयास किया कि जिस प्रकार ईश्वर ने स्त्री व पुरुष दोनों को ही एक आत्मा के रूप में उत्पन्न किया है उसी प्रकार वे दोनों इस भौतिक संसार में भी सहयोग से प्रेम से चलते रहे।''

ब्रह्मसमाज के संस्थापक राजा राम मोहनराय भारतीय जन–जागरण तथा आधुनिक चेतना के अग्रदूत माने जाते हैं। उन्होने पूर्व और पश्चिम की वैचारिक, सामाजिक, धर्मिक प्रवृतियों के बीच एक मध्य मार्ग का निर्माण किया, सती प्रथा, बाल–विवाह का विरोध किया, विधवा–विवाह को प्रोत्साहन दिया, बहुविवाह प्रथा एंव कुलीन विवाह प्रथा दोनों का विरोध किया। उन्होंने नारी अभ्युत्थान तथा उसकी आर्थिक स्वाधीनता के लिए आन्दोलन किया। प्रार्थना समाज नामक संस्था के भी चार उद्देश्य थे। जाति प्रथा का
विरोध, विधवा विवाह का समर्थन, स्त्री शिक्षा का प्रचार और बाल विवाह का विरोध। अतः प्रार्थना समाज के सुधारवादी नेताओं ने सर्व प्रथम इन मुद्दों पर ही अपना ध्यान
केन्द्रित किया।'

थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना हैलेना पेत्रोवता ब्लोवास्की नामक रूसी महिला ने की थी। यह संस्था संपूर्ण मानवता के हित में कार्य करने लगी । श्रीमति एनीबेंसेंट एक विदुषी महिला थी। इन्होंने भारत में स्त्रियों की स्थिति को उपर उठाने में तथा उन्हें दिन–प्रतिदिन अधिक शिक्षित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।''[12]

स्त्रियों की स्थिति सुधारने के लिए महात्मा गांधी जैसे नेताओं ने भरसक प्रयत्न किये। राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा महिलाओं को आगे लाने के प्रयत्न से ही कई महिला नेता उभरकर सामने आई जिनमें विजया लक्ष्मी पंडित, कस्तूरबा, अरुणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी, इंदिरा गांधी आदि मुख्य हैं। हिन्दी साहित्य की महान लेखिका श्रीमति महादेवी वर्मा कहती हैं,'' छाया का कार्य आकार में अपने आपको इस प्रकार मिला देना है, जिससे वह उसी समान जान पड़े और संगिनी का अपने सहयोगी की प्रत्येक त्रुटि को पूर्णकर उसके जीवन को अधिक से अधिक पूर्ण बनाना।''

सदियों से शोषित स्त्री को स्वतंन्त्रता आंदोलन, सुधार आंदोलनों से बल मिला। नारी को सामाजिक न्याय तथा समानता दिलवाने के लिए अनेक सामाजिक संस्थाएँ सामने आई तथा बुद्धिजीवी वर्ग ने उनका साथ दिया। शनैः शनैः सदियों से गुलामी में जकड़ी बेड़ियाँ कटने लगी। स्वतन्त्रता आन्दोलन से स्त्री दोहरी गुलामी से मुक्त होने का प्रयास करने लगी। एक दोयम दर्जे की गुलामी जो अपने ही समाज में थी, तो दूसरी अंग्रजों की गुलामी। अंग्रजों की गुलामी से तो सभी को मुक्ति मिल गई, परन्तु उस दोयम दर्जे की गुलामी के लिए संघर्ष आज भी जारी है। भारतीय स्त्री शासक बनने की बात नहीं करती परंतु वह अब शोषित बनी रहने से इन्कार कर रही है। वह अपनी योग्यता, दक्षता सिद्ध करना चाहती है। आज की नारी में आई इस चेतना बदलाव का महत्वपूर्ण कारण है–शिक्षा। अशिक्षा के कारण वह सदियों से गुलामी की बेड़ियों में जकड़ी रही तथा उसे ही अपना नसीब समझने लगी। शिक्षा प्राप्त होने पर उसे अपने अधिकारों तथा अपने पर होने वाले अत्याचारों की परख हुई, उसे समझ आया कि उसका अस्तित्व घर–आंगन, बच्चों के पालन–पोषण तक ही नहीं है। अब उसमें एक नई चेतना जागृत हुई है। स्त्री चेतना का अर्थ यही है कि स्त्री आत्मनिर्भर हो, स्वतंत्रचेता हो, आत्मविश्वासी हो तथा अपने अधिकारों के प्रति जागरुक हो। यह एक स्वस्थ दृष्टिकोण है, नारी चेतना पुरुष से मुक्ति की माँग ही नहीं है, बल्कि उन सड़ी गली परंपराओं, रुढ़ियों से प्रत्येक मानव की मुक्ति की जिससे पुरुष भी उतना ही प्रभावित है। नारी पतन या शोषण के लिए सिर्फ पुरुष को दोषी मानना गलत है। स्त्रियाँ स्वयं भी शोषण का मार्ग प्रशस्त करती हैं। दहेज के लिए जलाई जाने वाली बहुओं के पीछे, सास–ननद ही होती हैं। देखा जाए तो पूरा दोष न तो पुरुषों का है और न स्त्रियों का। पुरुष प्रधान समाज की मानसिकता, संस्कार और परिवेश ने स्त्री–पुरुष की विचारधारा को निश्चित दायरों में बाँध दिया है। न अकेला पुरुष जीवन सार्थक है, न अकेला स्त्री–जीवन। दोनों एक दूसरे के पूरक है। फिर भी किसी एक का दमन हुआ है।

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

संत विनोबा भावे का कहना है– ''स्वतन्त्रता हमारा कर्मसिद्ध अधिकार है।'' आज नारी कहती है कि वह जीवन के प्रत्येक कर्म में पुरुषों के साथ सहभागी रही है जीवन के प्रत्येक पहलूओं की जिम्मेदारी समान रूप से उठाती है तो भी जीवन में उसके साथ अन्याय क्यों?''

विश्व की सभी नारियों ने सदैव ही स्वयं को जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में उपेक्षित समझा है। यह भावना धीरे–धीरे समग्र नारी जाति की आवाज बन गई। स्त्रियाँ अब स्वयं के लिए उठ खड़ी हुई। इस नारी चेतना या जागृति को अमेरिका की साराहहेल ने प्रथम अभियान का रूप दिया। इन्हें नारी चेतना, मुक्ति आन्दोलन की प्रथम प्रवर्तक माना गया है। साराहहेल ने 'लेडीज मैग्जीन' नामक पत्रिका के माध्यम से नारी मुक्ति चेतना की आवाज पूरे विश्व में पहुँचा दी। उन्होंने बोस्टन प्रांत की गरीब स्त्रियों के लिए काम किया तथा उन्हें भुखमरी गरीबी, तथा शोषण की जिंदगी से मुक्ति दिलाने का कार्य किया, वहाँ की महिलाओं को जागृत किया। ''आज अमेरिका में चल रहे नारी आंदोलन विश्व की बुद्धिमान स्त्रियों की जागृति, चर्चा का विषय रहा है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नीति–निर्धारण करते समय पुरुष नारियों का सहयोग लें, दोनों मिलकर सहभागी, सुखद जीवन के नियमों को सामने रखते हुए अपनी सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक व्यवस्था बनाये।'' अमेरिका में नारी मुक्ति आन्दोलन का नेतृत्व बेट्टी फ्राइडन ने किया। वे कहती हैं पुरुषों ने मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से मानसिक दबाव डालकर नारी समाज की मौलिक प्रतिभा को कुंठित कर दिया है। बेट्टी फ्राइडन ने अपनी किताब 'द फेमिनिन मिस्टिक' लिखकर नारी अधिकार, नारी जागृति, राष्ट्रीय महिला संगठन, मुक्ति आन्दोलन की बातों को सक्रिय बनाने में योगदान दिया। फलस्वरुप 26 अगस्त,1970 में अमेरिकन स्त्रियों को मत देने का अधिकार मिला।

महिलाओं ने महात्मा गाँधी के स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन में हिस्सा लिया। अपने साहस, वीरता शौर्य से आन्दोलन को सफल बनाया। माँ कस्तूरबा, कमला नेहरु, सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ अली, विजया लक्ष्मीपंडित, इंदिया गांधी, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, स्वरूपा रानी नेहरु, मेडम कामा आदि कई नारियों ने स्वतन्त्रता संग्राम को सफलता की और अग्रसर करने में अपना योगदान दिया। स्त्रियों की स्थिति में एक बड़ा परिवर्तन, जाग्रति स्वाधीनता संग्राम के दौरान ही मिली। समान मताधिकार और उन्हें भी सामान्य नागरिक माना जाए, उन्हें भी शिक्षा प्राप्त करने का हक सुविधा होनी चाहिए। फलस्वरुप सन् 1980 में भारत के संविधान में महिलाओं को पूर्ण समान अधिकार दिये गये हैं।''आर्थिक, सामाजिक और वैचारिक ढ़ाँचे में परिवर्तन आने विश्व की स्त्रियों ने विविध रिवाज, अत्याचारों तथा परंपराओं के सामने आवाज उठाई है। दुनिया की प्रसिद्ध स्त्रियों ने विभिन्न समस्याओं को समाप्त करने के लिए नारी चेतना की जाग्रति पर विशेष बल दिया।

आज स्त्री को जो स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है उसके विस्तार की असंख्य संभावनाएँ हैं। ''युगों से दलित पीड़ित रहने के कारण जो हीनता के संस्कार बन थे, उन्हें आधुनिक भारतीय महिला ने रक्त और प्रस्वेद से इस प्रकार धो दिया है कि आगामी युग की महिला को उस पर कोई रंग नहीं चढ़ाना पड़ेगा।''

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास, डॉ. सुमन राजे, पृ. 110–116.
2. वही, पृ. 134.
3. वही, पृ. 134.
4. भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र, डॉ. एम. एम. लावनिया, पृ. 9.
5. आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण, डॉ. मोहम्मद अजहर ठेरीवाला।
6. महिला और मानव अधिकार, एम. एम. अंसारी,।
7. हमारी राष्ट्रीय अस्मिता और नारी का भविष्य, डॉ. हेमा देवरानी,।
8. हंस, फरवरी– 2000, सं. राजेन्द्र यादव।
9. श्रृंखला की बेड़ियाँ , महादेवी वर्मा।
10. सांस्कृतिक संक्रमण में नारी का अन्तर्द्वन्द्व और साहित्य, वीणा मिश्र, पृ. 2.
11. मोहनदास कर्मचन्द गांधी, महिलाओं से, पृ. 261.
12. प्रेमचन्द, चिन्तन और कला, डॉ. इन्द्रनाथ मदान, पृ. 209.

*****